class 8 lesson–1

प्रथम श्लोक में बताया गया है कि गुणवान व्यक्तियों के लक्षण गुण होते हैं | वही गुण, गुणहीन व्यक्ति को प्राप्त करके दोष बन जाते हैं |

जिस प्रकार नदियां पहाड़ से स्वादिष्ट जल लेकर निकलती हैं परंतु समुद्र में पहुंचने पर पीने योग्य नहीं रह जाती |

अर्थात लक्षण (behaviour) व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर होता है कि वह गुण है या अवगुण |

द्वितीय श्लोक में बताया गया है कि जो व्यक्ति साहित्य, संगीत, तथा कला-कौशल से रहित है ,वह वास्तव में सींग व पूछ के बिना पशु के समान है | जो घास न खाता हुआ भी जिंदा है | वैसे यह पशुओं के लिए गर्व की बात है कि कुछ इंसान भी पशु हैं|

तृतीय श्लोक में विभिन्न व्यक्ति के विभिन्न चीजों के नष्ट होने के बारे में बताया गया है- जो इस प्रकार है- लालची व्यक्ति का यश ,चुगलखोर की मित्रता ,कामचोर का कुल ,धन को चाहने वाले का का धर्म,
बुरी लत वालों की विद्या का फल, कंजूस का सुख,ऐसे राजा जिसके मंत्री प्रमाद से भरे हैं उसका राज्य,
नष्ट हो जाता है |

चौथे श्लोक में बताया गया है कि जिस प्रकार मधुमक्खी कड़वे या मीठे फूलों के रस को समान रुप से पीकर, मीठे रस उत्पन्न करती है | उसी प्रकार साधु लोगों को दुष्ट तथा सज्जन लोगों के वचनों को समान रूप से सुनकर मधुर वाणी बोलनी चाहिए |

पाँचवे श्लोक में कहा गया है कि जो पुरुषार्थ को छोड़कर भाग्य के सहारे रहते हैं। वे महल में शेर के समान रहते हैं तो भी उनके सिर पर कौए बैठते हैं।

छटवे श्लोक में कहा गया है कि पेड़ अनेक फूल,पत्ते, फल,छाया, जड़, छाल, तथा लकड़ी देते हैं। ये पेड़ धन्य हैं, जिनके पास जाकर याचक निराश नहीं लौटते। अर्थात् पेड़ का कोई भी भाग व्यर्थ नहीं होता।

सातवे श्लोक में कहा गया है कि विपत्ति आने पर चिंता करने से विपत्ति दूर नहीं होती। जिस प्रकार घर में आग लगने पर कुँआ खोदने का कोई लाभ नहीं होता अर्थात् विपत्ति का उपाय पहले सोच चाहिए।

प्रश्नः 2.

श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–(श्लोक के अंशों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–)

(क) समुद्रमासाद्य .....

(ख) ..... वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।

(ग) तद्भागधेयं ..... पशूनाम्।

(घ) विद्याफलं ..... कृपणस्य सौख्यम्।

(ङ) पौरुषं विहाय यः ..... अवलम्बते। ।

(च) चिन्तनीया हि विपदाम् ..... प्रतिक्रिया ।

उत्तरम्:

(क) भवन्त्यपेयाः,

(ख) श्रुत्वा,

(ग) परमं,

(घ) व्यसनिनः,

(ङ) दैवम्,

(च) आदावेव।

प्रश्नः 3.

प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत–(प्रश्नों के उत्तर एक पद में लिखिए–)

(क) व्यसनिन: किं नश्यति?

(ख) कस्य यशः नश्यति?

(ग) मधुमक्षिका किं जनयति?

(घ) मधुरसूक्तरस के सृजन्ति?

(ङ) अर्थिनः केभ्यः विमुखा न यान्ति।

उत्तरम्:

(क) विद्याफलम्,

(ख) लुब्धस्य,

(ग) माधुर्यम्,

(घ) सन्तः

(ङ) महीरुहेभ्यः

प्रश्नः 4.

अधोलिखित–तद्भव–शब्दानां कृते पाठात् चित्वा संस्कृतपदानि लिखत–(नीचे लिखे तद्भव शब्दों के लिए पाठ में से संस्कृत शब्द चुनकर लिखिए–)

यथा– कंजूस कृपणः

कड़वा .....

पूँछ .....

सन्तः .....

लोभी .....

मधुमक्खी .....

तिनका .....

उत्तरम्:

कटुकम्, पुच्छम्, लुब्धः, मधुमक्षिका, तृणम्।

प्रश्नः 5.

अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदं क्रियापदं च चित्वा लिखत–
(नीचे लिखे वाक्यों में से कर्तृपद और क्रियापदों का चयन करके लिखिए–)

वाक्यानि	कर्त्ता	क्रिया
यथा– सन्तः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।	सन्तः	सृजन्ति
(क) निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।	.....	.....
(ख) गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।	.....	.....
(ग) मधुमक्षिका माधुर्यं जनयेत्।	.....	.....
(घ) पिशुनस्य मैत्री यशः नाशयति।	.....	.....
(ङ) नद्यः समुद्रमासाद्य अपेयाः भवन्ति।	.....	.....

उत्तरम्:

	कर्त्ता	क्रिया
(क)	दोषाः	भवन्ति
(ख)	गुणाः	भवन्ति
(ग)	मधुमक्षिका	जनयेत्
(घ)	मैत्री	नाशयति
(ङ)	नद्यः	भवन्ति

प्रश्नः 6.

रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–(रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न–निर्माण कीजिए–)

(क) गुणा: गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।

(ख) नद्यः सुस्वादुतोयाः भवन्ति।

(ग) लुब्धस्य यशः नश्यति।

(घ) मधुमक्षिका माधुर्यमेव जनयति।

(ङ) तस्य मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः।

उत्तरम्:

(क) के गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति?

(ख) काः सुस्वादुतोयाः भवन्ति?

(ग) कस्य यशः नश्यति?

(घ) का माधुर्यमेव जनयति?

(ङ) तस्य कस्मिन् / कुत्र तिष्ठान्ति वायसाः।

प्रश्नः 7.

उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत–(उदाहरण अनुसार प
को पृथक्–पृथक् कीजिए)

यथा– समुद्रमासाद्य – समुद्रम् + आसाद्य

1. माधुर्यमेव – ..... + ...
2. अल्पमेव – ..... + ...
3. सर्वमेव – ..... + ...
4. दैवमेव – ..... + ...
5. महात्मनामुक्तिः – ..... + ...
6. विपदामादावेव – ..... + ...

उत्तरम्:

1. माधुर्यम् + एव
2. अल्पम् + एव
3. सर्वम् + एव
4. दैवम् + एव
5. महात्मनाम् + उक्तिः
6. विपदाम् + आदौ + एव